IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, October 2022
Impact Factor: 6.252

अलवर रियासत में आर्थिक क्रांति : एक अध्ययन

डॉ. मीना अम्बेश
सह–आचार्य
गौरी देवी राजकीय महिला महाविद्यालय, अलवर, राज.

शब्द कुंजी – अलवर में आर्थिक क्रांति, वस्त्र निर्माण, उद्योग, खनिज उद्योग, कृषि उद्योग कपड़ा, रंगाई का कार्य बंदूक बनाना, धातु खनिज, जूतियां, तेल उद्योग, अलवर रियासत में सडकों के विकास तथा कपास व अन्य वस्तुओं के रूप में प्राप्त कच्चे माल ने लघु व कुटिर उद्योगों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

सारांश–किसी भी स्थान की अर्थव्यवस्था में वहां के उद्योगों का योगदान महत्वपूर्ण होता है। राष्ट्रीय आय का भी अधिकांश भाग कृषि उद्योग एवं खनिज उद्योग से प्राप्त होता है। आर्थिक नियोजन के इस युग में सभी क्षेत्रों को विकसित करने का प्रयत्न किया जा रहा है। किस उद्योग की स्थापना कहां की जाए इसका निर्णय आर्थिक, सामाजिक एवं सुरक्षा संबंधी परिस्थितियों का अध्ययन एवं कारणों को ध्यान में रखकर किया जाता है। तत्कालीन राजाओं ने ब्रिटिश सरकार द्वारा तथा आधुनिक समय में सरकार द्वारा जो भी अलवर क्षेत्र में उद्योगपति स्थापित हुए वे सभी समस्त बातों को ध्यान में रखकर ही किए गए। राजस्थान में स्थित अन्य जिलों की तरह प्राचीन काल में अलवर राज्य के अंतर्गत भी कुछ उद्योग धंधे थे, जो कि घरेलू उद्योगों के सामान के उद्योगों में देसी औजारों का प्रयोग किया जाता था। उद्योगों के द्वारा ग्राम वासियों के दिन पर दिन काम आने वाली वस्तुओं का ही निर्माण किया जाता था। इस जिले के प्रत्येक गांव में दिन–प्रतिदिन का आने वाली सभी वस्तुओं के उद्योग लगे हुए थे वहां के निवासियों की आवश्यकताओं की पूर्ति करते रहते थे। पूर्व काल में यहां पर कपड़ा बुनने, कपड़े की रंगाई छपाई करने का उद्योग था।

18 वीं शताब्दी के मध्य तक भारत आर्थिक दृष्टि से संपन्न था तथा यहां उन्नत उद्योग धंधे स्थित थे। समय–समय पर अनेक व्यापारियों, पादरियों तथा यात्रियों ने भारत की यात्रा की। ऐसी स्थिति में पुर्तगाली, अंग्रेज दक्षिण, फ्रेंच इत्यादि को भारत की आर्थिक संपन्नता ने आकर्षित किया। मार्कोपोलो ने भारत को एशिया का मुख्य बाजार कहां है। भारत में बनी सूती और रेशमी वस्त्र विश्व के बाजारों में बड़ी प्रतिष्ठा और सम्मान के साथ उपयोग में लाए जाते थे। हस्तकला उद्योगों से भी निर्मित वस्तुएं विदेशों में जाती थी।

18वीं सदी में राजस्थान के उद्योग प्रमुख रूप से दो श्रेणियों में विभक्त थे–1. ग्राम–उद्योग व 2. नगर उद्योग। राजस्थान में औद्योगीकरण के लिए सामान्यतः यहाँ खनिज सम्पदा व कच्चा माल पर्याप्त मात्रा में उपलव्य थे। कच्चा माल यहां से बहुत ही कम मात्रा में आयात किया जाता था। स्थानीय उद्योग–धन्धों के लिए आवश्यक कच्चे माल की पूर्ति स्थानीय खानों और कृषि–पैदावारों से हो जाती थी। इसी कारण 18वीं सदी के अन्त में स्थानीय माँग की पूर्ति के लिए गांवों में कई कुटीर उद्योग–धन्धे विद्यमान थे।

लघु कुटीर उद्योग धंधे संपन्न अवस्था में थे। प्रत्येक गाँवों में कुम्हार, बढ़ई, मोची, लुहार व जुलाहे होते थे, जो स्थानीय व्यक्तियों की आवश्यक वस्तुओं का उत्पादन करते थे। कारीगर अधिकतर पैतृक व्यवसाय अपनाते थे और वे इस प्रकार अपनी जातियों का निर्माण भी कर लेते थे। कम्बल बनाना, जूते बनाना, रस्सी बटना व भेड़ पालना भी राजस्थान के प्रमुख उद्योगों में थे। राजस्थान के गांवों में गुड़, तेल व शराब बनाने के उद्योग भी उन्नत अवस्था में थे। नगरों के कारीगर ग्रामीण कारीगरों से अधिक दक्ष होते थे । कशीदाकारी व ज़री का कार्य उन दिनों राजस्थान में खूब होता था। मारवाड़, जयपुर के सांगानेर बन्धेज के कार्य के लिए राजस्थान में विख्यात थे। बीकानेर, जोधपुर, जैसलमेर, शेखावाटी, मालपुरा, नागौर व मेड़ता में ऊनी कम्बल, मलमल तैयार करने में कोटा का उस समय प्रथम स्थान था। जालिम सिंह ने चन्देरी व आगरा से अच्छे कारीगर कोटा में आमन्त्रित किए थे जो मखमल के लिए अच्छा व बारीक धागा तैयार करते थे। जब झालावाड़ एक अलग राज्य बन गया तो वहाँ अलग से लघु उद्योग विकसित किये गये। झालरापाटन में टाट–पट्टी व पुतली तैयार करने का काम अच्छी मात्रा में होता था। उदयपुर अपने काष्ठ–कार्य के लिए आज भी विख्यात है। अतः उन्होंने युद्ध के शस्त्र भी अपने यहाँ ही बनवाने की व्यवस्था कर रखी थी। बन्दूक, तलवारें, बल्लम व तोपें यहीं बनती थीं। कोटा के रेकार्ड से ज्ञात होता है कि कोटा में तोपें बनती थीं और इमाम कमाल तोपों के निर्माण में सिद्धहस्त व्यक्ति था। कोटा, जालौर, जोधपुर व जयपुर में तोप के गोले तैयार किए जाते थे। मीर खाँ और कासिम खाँ कोटा में तोप के गोले बनाने में दक्ष थे। पाली, जोधपुर, जयपुर व कोटा तलवारें बनाने के प्रमुख केन्द्र थे।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, October 2022
Impact Factor: 6.252

राजस्थान में स्थित अन्य जिलों की तरह प्राचीन काल में अलवर राज्य के अंतर्गत भी कुछ उद्योग धंधे थे जो कि घरेलू उद्योगों के सामान के उद्योगों में देसी औजारों का प्रयोग किया जाता था उद्योगों के द्वारा ग्राम वासियों के दिन पर दिन काम आने वाली वस्तुओं का ही निर्माण किया जाता था। इस रियासत के प्रत्येक गांव में दिन–प्रतिदिन का आने वाली सभी वस्तुओं के उद्योग लगे हुए थे। वहां के निवासियों की आवश्यकताओं की पूर्ति करते रहते थे। पूर्व काल में यहां पर कपड़ा बुनने, कपड़े की रंगाई छपाई करने का उद्योग था।

अलवर रियासत में जन सामान्य की आजीविका का प्रमुख साधन कृषि एवं पशुपालन था लेकिन अलवर रियासत व्यापार उद्योग के लिए प्रसिद्ध रहा है। अलवर कपड़ा बुनने, कपड़े की रंगाई छपाई का कार्य सरसों, धनिया, मसाले, तेल, कपास, तंबाकू, बांस की लकड़ी या जूतियां आदि वस्तुएं बाहर भी भेजी जाती थी। कहने का तात्पर्य है कि अलवर में बनाई हुई चीजों से ना केवल अलवर वासियों की जरूरत का सामान निर्मित होता था। इसके अलावा अलवर में बहुत सा उद्योग ऐसी वस्तुओं का भी प्रचलित था जिन्हें दूसरे रियासतों में भेजा जाता था और यही कारण रहा अलवर में उद्योग व व्यापार उन्नत अवस्था में देखने को मिलता है।

ग्रामीण स्तर पर लोगों की आवश्यकता के अनुरूप कपड़े बुनने, बर्तन बनाने, जूते बनाने एवं तेल निकालने का कार्य जाति विशेष के लोग यहां करते थे। इन उद्योगों में देसी औजारों द्वारा वस्तुओं का उत्पादन किया जाता था। अलवर के उद्योगों को चार भागों में विभाजित किया जा सकता है। पहला वस्त्र निर्माण उद्योग दूसरा खनिज उद्योग तीसरा कृषि उद्योग चौथा अन्य उद्योग।

अलवर रियासत में कपड़ा बुनने, कपड़े की रंगाई छपाई का कार्य उन्नत अवस्था में था। राजगढ़ प्रतापगढ़ और नारायण कस्बों में कपड़ों पर छपाई का कार्य किया जाता था। अलवर शहर की एक गली जिसका नाम रंगभरीयान की गली है, यहां कपड़ों की छपाई का कार्य होता था। रंगाई का कार्य छिपी जाति और मुस्लिम परिवारों द्वारा किया जाता था। अलवर की रंगत और बदायूं में जो चमक होती थी वह अन्य कहीं देखने को नहीं मिलती थी। अन्य रियासतों के राजाओं और वायसराय को अलवर नरेश दुरु की भेंट करते थे जिसकी देश–विदेश में मांग थी। अलवर के मोहम्मद खां पुत्र रमजान खान करीम बख्श पुत्र अब्दुल रहमान मजीद पुत्र शेर मोहम्मद रफ़ी और लहरी के लिए प्रसिद्ध रंगरेज थे।

शाहपुरा के कोली रेजी अच्छी बनाते थे। हरसोरा में छापी हुई जाजम तोषक अच्छी बनाई जाती थी। इसकी काफी मांग भी रहती थी। अलवर राज्य की सादा एवं जरी की पगड़ी या प्रसिद्ध थी। बहादरपुर में पगड़ी पर्ची की बुनाई का कार्य किया जाता था। यहां पर बनी हुई पगड़िया दूर–दूर तक प्रसिद्ध रही है। यहां से पगड़ीया मालवा, इंदौर, आगरा उज्जैन आदि स्थानों पर निर्यात की जाती थी। अलवर में दूसरे राज्य से आए गलीचा कारीगरों को भी संरक्षण दिया गया। अलवर, नारायणपुर, अजबगढ़, हमीरपुर, बानसूर, चतरपुरा, रतनपुरा, राजगढ़ में घाघरा, गलीचा और कालीन बनाने के प्रमुख केंद्र थे।

ग्राम बहादुरपुर में पगड़ी पर्ची की बुनाई का व्यवसाय था। यहां पर बनी हुई पगड़ी या दूर–दूर तक प्रसिद्ध थी जो कि मालवा इंदौर आगरा उज्जैन आदि स्थानों को निर्यात की जाती थी। अलवर में मुख्य रूप से चमड़ा उद्योग जिले के सभी कस्बों में और ग्रामों में था क्योंकि उस समय आवागमन के साधन नहीं थे। अतः जहां कहीं भी कोई जानवर मरता था, वहां के रहने वाले उसकी खाल उतार कर उनसे जूतियां बनाने और चमड़े के अन्य सामान बनाने के लिए उसे उपयोग में ले लेते थे। इसी प्रकार बढ़ई, लोहार आदि का कार्य भी सभी स्थानों पर किया जाता था किंतु पत्थर पर खुदाई का कार्य अलवर के राजगढ़, थानागाजी, बहरोड़, अलवर, खेरली में ही किया जाता था। अलवर जिले के थानागाजी एवं ग्राम किशोरी में पत्थर की मूर्तियों का उपयोग अपनी चरम सीमा पर था। यह स्थान उद्योग की स्थापना करने के लिए उपयुक्त माना जाता है। जहां कच्चे माल को लाने और वहां से निर्मित वस्तुओं को वितरित करने के लिए परिवहन की सुविधा उपलब्ध होती थी। यद्यपि यहां पर आवागमन के साधनों का अभाव सदैव ही रहा है। यहां पर स्थित उद्योग धंधों में उन्नति लाने के लिए सर्वप्रथम 1807 में दिल्ली से बांदीकुई के मध्य रेल मार्ग आरंभ हुआ तथा कैप्टन इम्पे के प्रयास के दौरान आवागमन के साधनों में काफी प्रगति हुई। यहां पर महत्वपूर्ण सड़कों का भी निर्माण कराया गया ताकि इनके द्वारा यातायात का कार्य सुचारू रूप से किया जा सके। इनके द्वारा आयात निर्यात का कार्य किया जा सके। कैप्टन इम्पे के अलवर से चले जाने के पश्चात् सड़कों की ओर ध्यान देना बंद कर दिया गया। किन्तु कुछ समय बाद शाही दरबार द्वारा प्रशासनिक परिषद की स्थापना की गई जिसके द्वारा किया गया और निम्नलिखित मुख्य सड़कों का निर्माण कार्य कराया ताकि आवागमन के साधनों एवं निर्यात में कोई दुविधा उपलब्ध ना हो सके।

1. अलवर से भरतपुर सीमा तक
2. अलवर से गुड़गांव तक वाया रामगढ़ नौगांवा
3. अलवर से किशनगढ़
4. खैरथल से तिजारा वाया किशनगढ़
5. तिजारा से फिरोजपुर झिरका

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, October 2022
Impact Factor: 6.252

6. मौजपुर से राजगढ़ लक्ष्मणगढ़ मालाखेड़ा
7. लक्ष्मणगढ़ से मौजपुर
8. खैरथल से हरसोरा बहरोड बानसूर

सर्वप्रथम रेल मार्ग का प्रयोग अलवर से कपास निर्यात करने के लिए नहीं किया गया वरन चीनी, चावल, नमक व अन्य वस्तुओं के लिए किया जाता था लेकिन जैसे ही रेल मार्ग प्रारंभ हुआ इसका अत्यधिक प्रभाव कपड़ा उद्योग पर पड़ा। इसके पश्चात् विभिन्न स्थानों पर स्थित कपड़े की मिलों से कपड़े का आयात आरंभ हो गया जिसके फलस्वरूप अब स्थानीय बुने व छपे हुए कपड़ों की मांग दिन–प्रतिदिन कम होती गई। इस व्यवसाय के अंदर अधिकतर मुस्लिम समुदाय के लोग थे जो कि हिंदुस्तान पाकिस्तान के बंटवारे के समय यहां से चले गए।

यहां पर कभी भी बड़े पैमाने पर कोई उद्योग नहीं था। अतः सर्वप्रथम 1807 में लक्ष्मणगढ़ तहसील के ग्राम बुटोली में हाथरस के एक व्यापारी द्वारा इंडिगो नाम की फैक्ट्री स्थापित की गई। इस व्यक्ति के द्वारा किसानों से फसल खरीद कर उनके द्वारा उत्पादित वस्तुओं को कोलकाता निर्यात किया जाता था।

इसी प्रकार 1888 में खुर्जा के सेठ हरमुख राय, गोविंद राम ने रुई की गांठ बांधने का व्यवसाय स्टीम हाइड्रॉलिक प्रेस के नाम से आरंभ किया और यह व्यवसाय करीब 10 वर्ष तक चलता रहा और यहां से रुई की गांठे मुख्यतः मुंबई कोलकाता और अहमदाबाद भेजी जाती थी। 1893 के अंतर्गत 34,250 मन 1894 में 51,554मन, 1895 में 74,846 मन, 1896 में 31,181 मन रूई की गांठे बांधी गई। यहां पर इस व्यवसाय के लिए अलवर में रूई उत्पादन के अच्छे साधन नहीं थे किंतु इस जिले के आसपास के क्षेत्र में कपड़ों की मीलों में रुई की बहुत अधिक मांग थी। इसलिए यहां पर यह व्यवसाय आरंभ किया गया। रियासत ने उद्योग धंधों को जीवित रखने व जनसाधारण में जागृति लाने के लिए अलवर में सर्वप्रथम बिजलीघर की स्थापना 1942 में की गई और 1947 में राजगढ़ कस्बे में सबसे पहले एक डीजल पावर हाउस की स्थापना की गई। अलवर में स्थित उद्योग व्यवसाय को प्रोत्साहित करने और इनमें कार्यरत पदाधिकारियों के अधिकारों की सुरक्षा के लिए 1941 में 1 चेंबर ऑफ कॉमर्स स्थापित किया गया और इसमें उस समय 150 सदस्य थे। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सरदार वल्लभभाई पटेल ने राज्यों का एकीकरण किया और 19 मार्च 1948 को अलवर भरतपुर धौलपुर करौली इन चार राज्यों को मिलाकर मत्स्य संघ का निर्माण किया गया। इसके बाद 22 मार्च 1949 को लेकर राजस्थान प्रदेश में किया गया और इसे राजस्थान का एक स्वतंत्र जिला समझा जाने लगा।

अलवर में खनिज विभाग भी स्थापित किया गया लेकिन खनिज विकास का कार्य साधनों के अभाव में योजनाबद्ध तरीके से नहीं होता था। उस समय खनिज उत्पादन क्षेत्रों को कुछ वर्षों के लिए लीज पर दिया जाता था। अतः उत्पादन बहुत ही कम होता था। उस समय रियासत की वार्षिक आय लगभग 150,000 ही थी यद्यपि 1944 के लगभग अलवर रियासत के शासनकाल में यहां पर निदेशक वाणिज्य और उद्योग की नियुक्ति कर दी गई थी और इसका जो कार्य था वह स्थानीय उद्योगों को प्रोत्साहित करने का था और इसके फलस्वरूप यहां पर कुछ ही उद्योगों की स्थापना हुई। 1956 में अलवर में जिला उद्योग अधिकारी की नियुक्ति की गई और इसका कार्य था कि वह शहर और ग्रामीण में उद्योगों को प्रोत्साहित करें। इसके फलस्वरूप यहां पर कुछ ही उद्योग धंधों की स्थापना हुई।

अलवर में खनिज भी प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं लेकिन इनकी उत्पादन पर और उपयोग पर या तो अधिक लागत आती थी या उसी प्रकार के खनिज देश के अन्य स्थानों पर सस्ते मिल जाते थे। इसलिए यहां पर खनिज उद्योग विकसित नहीं हो पाया। यहां पाए जाने वाले मुख्य खनिजों में लोहा, तांबा, शीशा आदि प्रमुख थे। अलवर राज्य में लोहा भानगढ़ में राजगढ़ की खानों में मिलता था। राजगढ़ तोपों की ढलाई के लिए प्रख्यात रहा है। अलवर के कारीगर तलवार बनाने में भी प्रसिद्ध रहे हैं। चिड़ी में दो प्रकार की बंदूके बनाई जाती थी। यह बंदूके तोड़ीदा एवं चार बंदूकों के नाम से प्रसिद्ध रही है। अलवर में दरीबा, इंदवार, भानगढ़ तहसील, कुशलगढ़, प्रतापगढ़ में तांबे की कच्ची धातु प्रचुर मात्रा में मिलती थी। राजगढ़ में महाराजा प्रताप सिंह द्वारा स्थापित की गई अलवर में रेलगाड़ी उद्योग में मुख्य रहा यहां तेल सरसों अलसी का तेल निकाला जाता था। अलवर खैरथल राजगढ़ में तेल निकालने की मिली थी यहां से तेल अन्य राज्यों को जैसे आसाम, बंगाल, दिल्ली को निर्यात किया जाता था। इसी प्रकार तिजारा में जूते बनाए जाते थे जिनकी मां दूर–दूर के प्रदेशों तक थी। परगना किशनगढ़ के बंबोरा, हरसोली, इस्माइलपुर आदि पशुओं में मिट्टी के बर्तन बनाए जाते थे। मोरौडी गांव की कुम्हार मिट्टी के बर्तन बनाने के साथ–साथ उखल बनाने के लिए भी प्रसिद्ध थे।

अलवर की राजगढ़ तहसील में भानगढ़ कस्बा थानागाजी से दक्षिण दिशा की ओर 20 मील की दूरी पर स्थित है। भानगढ़ में कच्छावा शासक मिर्जा राजा मानसिंह के छोटे भाइयों और भगवानदास के छोटे पुत्र माधव सिंह का राज्य था। भानगढ़ के ध्वस्त बाजार के अवशेष पंक्ति व दुकानों के रूप में नजर आते हैं। खंडों के रूप में दोनों तरफ लंबी कतारों से बनी दुकानें इस बात की सूचक है कि किसी समय आसपास के क्षेत्र के लिए यह बड़ी व्यापारिक मंडी रही थी। दुकान में सामान रखने के लिए भी बनाए हुए हैं।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, October 2022
Impact Factor: 6.252

महाराजा तेज सिंह के काल में मेजर सीडब्ल्यू एल हार्वे ने सुमंत पद पर रहते हुए राज्य की आर्थिक स्थिति को उन्नत करने की दिशा में सराहनीय कार्य किए। राजधानी में एक बहुत बड़ा बर्फ का कारखाना तथा दो छापेखाने को ले गए। महाराजा तेज सिंह के काल में लाल दरवाजा बहार बुर्ज की खुदाई होकर नए तरीके का सुंदर मार्केट बनवाया गया। देश में उन्नत उद्योग धंधे और व्यापार की उन्नति के लिए व्यापार मंडल की स्थापना हुई जिसका उद्घाटन सवाई महाराज देव के कर कमलों से हुआ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1 जोशी, पिनाकी, लाल अलवर राज्य का इतिहास, प्रकाशक हिंदी प्रेम मंदिर अलवर पृष्ठ संख्या 107–109
2 जोशी अनिल–अलवर क्षेत्र में औद्योगिक क्रांति मां चंडी से भिवाड़ी पृष्ठ संख्या 10–13
3 मायाराम अरविंद, राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर अलवर ट्रस्ट 268 भारत प्रिंटर्स जयपुर 1968
4 राजस्थान राज्य अभिलेखागार बीकानेर बस्ता 26 पृष्ठ 5
5 जोशी अनिल, अलवर दर्शन पृष्ठ 148, शोध ग्रंथ, माला प्रकाशन, अलवर 2004
6 डॉक्टर सहारिया फूल सिंह, अलवर की कला और संस्कृति मेवात साहित्य अकादमी अलवर 2016 राजस्थान राज्य अभिलेखागार बीकानेर क्रमांक 318 बस्ता
7 जोशी अनिल, अलवर दर्शन, पृष्ट149 शोध ग्रंथ माला प्रकाशन, अलवर 2004
8 मायाराम, राजस्थान डिस्टिक गैजेटियर अलवर, पृष्ठ संख्या 287 भारतप्रिंटर जयपुर 1968
9 मत्स्य दर्पण स्मारिका जिला प्रशासन अलवर एवं पर्यटन विभाग राजस्थान पृष्ठ 13
10 विनय पत्रिका, 222
11 गहलोत जगदीश सिंह, कछवाहों का इतिहास पृष्ठ संख्या 288 यूनीक ट्रेडर्स जयपुर 2004
12 जोशी अनिल, अलवर क्षेत्र में औद्योगिक क्रांति मां चंडी से भिवाड़ी, पृष्ठ संख्या 8, कुसुम प्रकाशन ,अलवर 1989
13 मायाराम, राजस्थान डिस्टिक गैजेटियर अलवर पृष्ठ संख्या 272 ,भारत प्रिंटर्स जयपुर 1968
14 राजस्थान हिस्ट्री कांग्रेस प्रोसीडिंग्स वॉल्यूम 27 बेस्ट 287
15 जोशी अनिल ,अरजंग तिजारा पृष्ठ 64
16 राजस्थान हिस्ट्री कांग्रेस प्रोसीडिंग्स वॉल्यूम 27 पृष्ठ 287